अली और भयानक दानव

बहुत समय पहले एक गाँव में एक गरीब विधवा और उनका बेटा अली रहता था। एक दिन अली के माँ ने उससे अपनी एकमात्र बकरी को जाकर बेचने को कहा। क्योंकि उनके पास पैसे कि कमी थी। अली बकरी को लेकर बाजार चलने लगा। बकरी को खरीदने वालों को अली ने बहुत ढूँढ़ा। लेकिन नहीं मिला। आखिर में एक आदमी मिला जो अली के बकरी को खरीदना चाहता है। अली खुश हुआ। "आप बकरी के बदले में क्या देंगे?" - अली ने उस आदमी से पूछा। उस आदमी ने अपने कपड़े में से एक थैली उठाकर अली के हाथ में रखा और कहा :- "यह लो। इसमें पाँच जादुई फलियाँ हैं। यह बहुत अमूल्य है"। जादुई फलियाँ सुनते ही अली ने जल्दी से उसे अपने हाथ में लेकर चला गया। लेकिन अली की खुशी ज्यादा देर तक नहीं रहा। घर पहूँचते ही माँ ने उससे चिल्लाया। "तुम बहूत बड़े मुर्ख हो। उसने तुमसे अपनी बकरी छीन ली और बदले में कुछ फालतू की फलियाँ दी"। यह कहने के बाद माँ ने उस फलियों को खिड़की से बाहर फेंका। अली बहूत उदास हुआ। बिना रात के भोजन खाए, अली सोने को चला गया।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

नींद में अली ने एक सपना देखा की अली के पास बहुत सारा पैसा है। और उन पैसों से अली और माँ आराम से जिंदगी जी रहे थे। अली अचानक से नींद से उठा। "कितना इच्छा सपना था। काश हमारे पास भी ज्यादा पैसा होता।" यह सब सोचते हुए अली बिस्तर से उठकर चहरा धोने को जाता है। अली ने यूंही एक बार खिड़की से बाहर देखा। अली को ऐसा लगा की बाहर एक बड़ा सा पेड़ है। "बहुत सपने देखने के कारण मुझे अजीब चीजें दिखाई दे रही है।" - अली ने खुद से कहा। लेकिन सच में वह पेड़ वहाँ पर था। अली थोड़ी देर के बाद घर के बाहर चला गया। बाहर का नजारा देखकर अली हैरान हो गया। एक बड़ा सा फलियों का पेड़ अली के घर के बाहर था। वह पेड़ आसमान को छू रही थी। अली ने सोचा - "यह जरूर उस जादू की फलियों का काम है।" अली ने जल्दी से माँ को बताने को जाता है। लेकिन तब ही उसे याद आता है कि माँ उससे अब भी नाराज है। तो अली ने ना कहने का सोचा। उस पेड़ के पत्ते बहुत बड़े थे। इसलिए अली उस पेड़ पर चढ़ने लगा। उसे देखना था कि ऊपर क्या है। बहुत समय की चढ़ाई के बाद अली आखिर में ऊपर पहुँचा। वहाँ आसमान में अलग ही जगह था। अली इस बादल में

घड़ा हो पा रहा था, वहाँ आसमान में एक बड़ा सा महल था। वह दिखने में बड़ा और डरावना था। अली उस महल के अंदर चलने लगा। वह महल के अंदर चलकर अली आसपास देखा। वह महल असल में एक दानव और उनकी पत्नी की थी, लेकिन अली को वह नहीं पता था। अचानक रसोई से दानव कि पत्नी आई। अली चौंक गया। लेकिन वह पत्नी दयालू थी। अली ने बिना कुछ सोचे कहा - "मुझे बहुत भूख लगी है। कुछ खाने को दीजिए ना।" दयालू पत्नी ने अली को रोटी और दूध, खाने को दिया। अली खाना खाया। अचानक बहुत जोर की कदम की आवाज सुनने लगा। वह दानव था। अली ने जल्दी से जाकर रसोई में छिपा। अंदर आते ही दानव ने चिल्लाया। "मुझे एक इनसान की खुशबू आ रही है। वह जिंदा है, या मर चुका है, अपनी रोटी बनाने कोलिए में उसकी हड्डियों को पीसूँगा।" अली यह सुनकर घोड़ा डर गया। अली के बगल में कोयला जल रहा था, इसलिए बहुत गरमी थी। अली अपने आप से कहा - "अरे यार, यहाँ तो बहुत गरमी है। कब तक इंतजार करूँ।" पत्नी ने दानव से कहा "यहाँ कोई इनसान नहीं है। आप खाना खाइए।" दानव खाना खाने लगा। उसके बाद सोने को

चला गया। लेकिन उस से पहले दानव ने कमरे में एक थैली रखा। उस में सोने के सिक्के थे। दानव के पास वह थैली अली ने देखी थी। दानव उसके बाद सोने को चला गया। अली इस मौके पर रसोई से चुपकर बाहर निकला और सीधा दानव के कमरे की ओर चला गया, बिना किसी आवाज बनाके अली ने वह थैली लेकर बाहर गया। और चल्दी से पेड़ से नीचे उतरा। घर पहुँचने के बाद अली ने माँ को जो कुच्छ हुआ, वह सब बताया। माँ बहुत खुश थी। और वह दोनों आराम से रहने लगे,

कुछ दिनों के बाद अली ने फिर से उस फलियों के पेड़ पर चढ़ने लगा, पिछले बार की तरह ही अली ने महल के अंदर गया और दानव के पत्नी को देखा। "मुझे बहूत भूग लगी है। कुछ खाने को दिजिये माँ।" दयालू पत्नी ने अली को रोटी और दूध दिया, खाने के बीच दानव वहाँ पर आया। पैर के आवाज़ सुनने के कारण अली पहले ही छिप गया था। दानव ने चिल्लाया, "मुझे एक इनसान की खुशबू आ रही है। चाहे वह जिंदा हो या मर गया हो, अपनी रोटी बनाने के लिए मैं उसकी हड्डियों को पीसूँगा, पत्नी ने जवाब दिया - "यह आप

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 105

क्या कह रहे हो ? यहा कोई इनसान नहीं है । आप खाना खाईए ।" दानव खाना खाने के बाद सोने को चला गया । इस बार दानव के पास एक मुरगी थी । "मुझे जल्दी से एक अंडा दो ।" - दानव ने मुरगी से कहा । मुरगी ने दानव को एक सुनहरा अंडा दिया । उसके बाद दानव सोने को चला गया । अली धीरे-धीरे से जाकर वह मुरगी और सुनहरा अंडा लिया और भाग गया । उन दोनों को लेकर घर जाकर माँ को दिया । माँ फिर से खुश हुई । वह कुछ समय तक बिना तकलीफों के साथ जिया ।

कुछ महीनों के बाद, अली तीसरे बार भी वह पेड़ चढ़ने को चला गया । हर बार की तरह महल में दयालू पत्नी थी । पत्नी ने अली को बिना पूछे ही खाना दिया । खाने के बीच दानव फिरसे चिल्लाते हुए आया । "मुझे एक इनसान की खुशबू आ रही ही है । वह ज़िंदा है या मर गया है, अपनी रोटी बनाने केलिए मैं उसकी हड्डियों को पीसूँगा ।" - दानव ने चिल्लाया । इस बार पत्नी भी चिल्लाया "आप मुर्ख मत बनो । यहाँ कोई इनसान नहीं है । आप खाना खाईए ।" खाना खाने

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

के बाद दानव सोने को चला गया। इस बार दानव के पास एक जादुई वीणा था जिस में से सुरीली आवाज़ निकल ती थी। वह वीणा कमरे में रखकर दानव सोने को चला गया। अली चुपके से वह वीणा उठाया और भागने लगा। लेकिन अचानक वह वीणा चिल्लाने लगा। "मुझे कोई बचाओ! यह लड़का मुझे चुराकर लेजा रहा है मास्टर।" यह सुनते ही दानव नींद से उठा और गुस्से के साथा अली के पीछे दौड़ ने लगा। दानव बहूत बड़ा था, इसलिए तेजी से नही दौड़ पा रहा था। लेकिन अली बहूत तेज था। वह आसानी से फलियों के पेड़ से नीचे उतरकर घर चला गया। घर में से एक कुल्हाड़ी लेकर अली पेड़ के पास गया। तब दानव पेड़ से नीचे उतर रहा था। अली ने वह कुल्हाड़ी लेकर पेड़ को काटने लगा। दानव उस पेड़ से नीचे गिरा और मर गया।

अब अली और माँ अमीर बन चुका था। वह अपने छोटे से घर बदलकर एक बड़ा घर बनाया और वहाँ आराम से ज़िंदगी जीने लगा।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)